

खंड-क

उत्तर-०१ (क)

प्रत्येक प्राणी का संविधान जीवन के एक-एक क्षण से होता है। किंतु व्यक्ति उसके महत्व को नहीं समझता। अधिकतर व्यक्ति सोचते हैं कि कोई अन्यथा समय आएगा तो काम करेंगे। इस दृष्टिधारा और उद्देश्य से जीवन के बहुमूल्य क्षणों के खो देते हैं।

उत्तर-०१ (ख)

किसी व्यक्ति को बिना हाथ-पाँव हिलाये अर्थात् कर्म किए बिना सकलता प्राप्त नहीं होती। समय भी उनका साथ छोड़ देता है जो भाग्य भरोसे बैठते हैं और कर्म नहीं करते। कर्म का कोई विकल्प नहीं होता। इसलिए भाग्य भरोसे बैठना पुरुषार्थ का अप्रमाण कहा गया है।

उत्तर-०१(ज)

दार्शनिक उस्त के कथन - "प्रत्येक व्यक्ति को उचित समय पर उचित व्यक्ति से, उचित मात्रा में, उचित अद्देश्य के लिए, उचित ढंग से व्यवहार करना चाहिए।" का आशय है कि व्यक्ति को सदैव ही समय का सम्मान, कर्म का पथ व जीवन का लक्ष्य निर्धारित कर अस्की प्राप्ति के लिए संघर्ष करना चाहिए। उचित अवसर का लोभ उठाना चाहिए।

उत्तर-०१(द)

लक्ष्मी की प्राप्ति उसे ही होती है जो श्रम और समय का पारखी होता है अर्थात् इनके महत्व को समझता है।

उत्तर-०१(ड०)

शाखक :- "समय व कर्म का महत्व।"

उत्तर . ०२ (क)

~~रोह~~ में आने वाली बाधाओं के सिर को कुचलकर आगे बढ़ता है। तात्पर्य है कि कवि उन बाधाओं का इटकर सामना करता है व उन्हें हराकर जीवन में आगे बढ़ता है।

उत्तर . ०२ (ख)

कवि हमें प्रेरणा देना चाह रहा है कि जीवन संदिखों का दूसरा नाम है। बाधाएँ जो हमारी राह में अड़ूचने वालकर सामने आती हैं, उनसे जितना लचकर चलेंगे, उतनी ही लड़ी होकर वे सामने आएंगी। हमें उनका इटकर सामना करना चाहिए व जीवन कृपी नात को भवसागर में अप्रसर रखना चाहिए।

उत्तर . ०२ (ग)

कवि ने अपना माँझी इस जीवनकृपी भवसागर को पार कराने वाले के लिए कहा है। वह कवि का 'शुभाचितक' व मित्र है।

उत्तर-०२(ष)

उन्नत भाल का आशंका है कवि के समक्ष आई बाधाओं का सिर जिसे वह
अपनी कुदाल से छुकाता है। यह बाधाओं का गुस्सा है।

उत्तर-०३(ट.)

जीवन की नैया का चतुर खिंचा - 'कवि' को कहा गया
है।

खंड - ख

उत्तर-03 (क)

मुझे अपनी पली और पुत्र की मृत्यु कीभी याद आ रही है और फादर के
शहदों से इतरती शांति कीभी याद आ रही है।

उत्तर-03(ख)

रात होने पर आकाश में तारों के असंख्य दीपक जल उठे।

उत्तर-03 (ग)

उपवास भेद:- संज्ञा उपवास

उत्तर-04 (क)

हालदार साहब के द्वारा पन खाया गया।

उत्तर .०४(ख)

दादा जी से प्रतिदिन पार्क में ठहला जाता है।

उत्तर .०४ (ज)

गांधी जी ने विश्व को सत्य और अधिंसा का संदेश दिया

उत्तर .०४ (इ)

खिलाड़ी से दौड़ा नहीं गया।

उत्तर .०५ (क)

विद्यालय से :- रस्ता, जातिवाचक, पुलिंग, रक्तव्यन, कर्म कारक अपादान

उत्तर .०५ (ख)

दयानपूर्वक :- अत्यर्याम, क्रियाविशेषण, जातिवाचक, 'सुनी' की विशेषता

उत्तर .०५ (ग)

मुमन्त्र :- सर्वाम, पुरुषवाचक, मद्यपुरुष, रक्तव्यन, कर्ता कारक

उत्तर - 05 (द)

दस :- विशेषण, मिश्रकृत संख्यावाचक, लहुवाचन, उल्लिंग, 'हात' की विशेषता।

उत्तर - 05 (इ)

के बिना :- अव्यय, संवंचनवोधक, परिश्रम और कामकालता के मध्य संवंचन स्थापित।

उत्तर - 06 (क)

उद्धर गरजती सिंधु लहरिया, कूटिल काल के जालों सी।
चली आ रही फेन उगलती, कन फैलार व्यालों सी।

उत्तर - 06 (ग)

जुगुआ :- वीभत्स रस

उत्तर - 06 (द्य)

शांत रस का स्थायी भाव - निर्विदि है।

उत्तर - 06 (इ)

'ष्टुगार रस' को रसराज कहा जाता है।

खंड - ग

उत्तर - 07 (क)

लेखिका ने माँ की उपमा धरती से इसलिए किया है क्योंकि
उनमें धरती जैसी सहनशीलता व दौर्या था। जिस प्रकार धरती
सभी कष्टों को दोयपूर्वक सहती है उसी प्रकार लेखिका की
माँ भी पिता जी के सारे अत्याचारों को व बंध्यों की
सभी उचित - अनुचित फरमाइशों को अपना दोयित्व समझकर
चुपचाप सहन करती थीं।

उत्तर-०७(छ)

लेखिका को उनकी माँ का असहाय मजबूरी में लिपटा व्याग कभी अट्ठा नहीं। न ही उनकी साइण्टा लेखिका को भाई। उनकी माँ का यह ही विना विरोध के सभी कार्यों को करते जाना व अन्याय का प्रतिकार न करने का स्वभाव ही वह कारण था जिससे वे कभी भी लेखिका की आदर्श न लग सकीं।

उत्तर-०७(ग)

लेखिका व उनके भाई-बहनों का सहानुभूति अपनी माँ के साथ अधिक थी।

उत्तर-०८(क)

लेखिका ने क्रादर बुल्के को यह की अपीली की उपाधि समर्पित की है। वह उनकी याद में श्रद्धानन्द है। यह की उनका तपस्या के उत्पन्न होती है जो अत्यंत ही पवित्र होती है। क्रादर का जीवन व व्यक्तित्व तरलता व पवित्रता की प्रतिमूर्ति था।

अपने हर प्रियजन के लिए असीम ममता उनकी आँखों में
साफ दृष्ट्य था। लेखक फादर को पवित्रता से प्रभावित है।
अस्तु उसने फादर को राज की पवित्र आग की उपाधि
समर्पित की है।

उत्तर - ०४(ख)

मनू मंडारी की अपने पिता से वैचारिक टकराहट बचपन में आरंभ हुई वह राजेंद्र से विवाह करने तक चलती रही। बचपन में पिता जी के अनजाने-अनचोहे व्यवहार ने लेखिका में हीन ग्रन्थि का संचार किया। लेखिका से दो साल बड़ी बहन सुशीला का रंग गोरा था और लेखिका काली थी। पिता जी हर बात में उन दोनों की तुलना करते रहते थे जिसने लेखिका को शक्की स्वभाव का बना दिया और वे बात-बात पर भन्ना जाती थीं। यह या टकराहट का पहला कारण।

दूसरा कारण, यह था कि पिता जी चाहते थे कि लेखिका घर में ही रहे और बाहर जाकर सड़कों पर मारन ले किंतु लेखिका का लहू लाना बन गया था और उसे आँखों के दसरे में चलना स्वीकार न था। इससे उन दोनों के मध्य वैचारिक टकराहट होती थी।

उत्तर - ०४(ग)

'नेताजी का चरमा' पाठ में सरकंडे का चरमा मूर्ति पर लगाना कह यह दर्शाता है कि देशभक्ति की भावना अब भी बच्चे-बच्चे में कूट-कूट कर भरी है। केटन की मृत्यु के पश्चात हालदार साहब मायूस हो गए और सोचा कि अब सुमाध-चंद्र बोस की मूर्ति तो अतश्य होगी पर उस पर चरमा नहीं होगा। वे उस कोम के लिए व्यधित थे जो देशभक्ति का मजाक उड़ाती है। जब वह कस्बे से गुज़रे तो उन्होंने देखा कि मूर्ति पर सरकंडे का चरमा या जैसा बच्चे बना लेते हैं। इन्होंने किंवास हो गया कि देशभक्ति की भावना अब भी छोष है।

उत्तर - ०४(द)

लालगोविन मगत अपने सुरत और बोदे बेटे के साथ प्रेमपुर्ण व्यवहार करते थे त आधिक देखभाल करते थे। इसका कारण या कि वे मानते थे कि स्त्री लोग निराजनी व देखभाल के ज्यादा हकदार होते हैं। उनके बेटे के पास कम अकल थी और लालगोविन मगत सदृव उसे अपने संरक्षण में रखते थे।

उत्तर - 09 (क)

परशुराम के कुट्टिय होने पर लक्ष्मण जी ने राम को निर्देश सावित करने हेतु निम्नलिखित तक दिए :—

- लखन कहा हसि हमेरे जागा | सुनहु देव सब धनुष समाना ॥
अर्थात् हमारी नज़र में तो सभी धनुष एक समान हैं। हम धनुष देखकर नहीं तोड़ते।
- वहु धनुहीं तोरी लरिकाहि | कवहु न असि रिसि कीहि जोसाहि ॥
अर्थात् वचपन में हमने कित्ते धनुष तोड़े परत्वि आपने कभी क्रोध नहीं किया फिर इस धनुष पर इत्ती नमता क्यों?
- धनुष पुराना था इसलिए राम के छुते ही टूट गया। इसमें उनका कोई दोष नहीं।

उत्तर - 09 (ख)

परशुराम ने अपनी शाकितयों के विषय में बताते हुए कहा कि

“भुजवल भूमि भूप विन कीहि।” “सहस्राहु भुज छेद निहारा,”
 “बालवहु मन्चारी अति कोहि।” विस्व विदित लक्ष्मियकुल दोहि ॥”

अर्थात् उनकी शाकित ने व कुठार ने कई बार पृथक्को को लक्ष्मियमुक्त

किया है जो कि विश्वविख्यात है। उन्होंने सहस्रलाङ्की मुजाओं को छेद दिया। वे अपरे को बालबहुमतचारी व क्रोधी स्वसाव का भी लताते हैं।

उत्तर - 09(ग)

‘परशुराम दाक्षियकुल के बान्धु हैं’ – यह बात विश्वविख्यात है।

उत्तर - 10 (क)

“सँगतकार की हिचक उसकी विफलता नहीं बल्कि मनुष्यता है।”
 अयति जब मुख्य गायक का सँगतकार साथ देता है तो वह अपनी आवाज व प्रतिभा को ऊँचा होने से रोक देता है। यही उसकी मनुष्यता है। ऐसा वह इसलिए करता है ताकि मुख्य गायक का प्रभाव व सम्मान लना रहे। उसका उद्देश्य गायक की आवाज को दबाना नहीं बल्कि उसे सुदृढ़ बनाना है। यह हिचक उसकी आवाज में साफ सुनाई दती है। इसे उसकी मनुष्यता का परिचायक समझा जाना चाहिए। यह मनुष्यता वह मुख्य गायक का साथ देकर कायम रखता है।

उत्तर - 10 (ख)

‘अट नहीं रही’ कविता कवि ‘मिराला जी’ ने फागुन की शोभा का अनुपम वर्णन किया है। “कहीं सांस लेते हो, धर-धर भर देते हो।” “पाट-पाट शौश्चाश्री, पट नहीं रही”, “मंद-गंध-पुष्पमाल” आदि पंक्तियाँ फागुन के सौंदर्य को व्यक्त करती हैं। फागुन में वातावरण सुगंधित हो जाता है, पक्षी चहचहाने लगते हैं, पेड़ों पर कहीं हरी कहीं लाल पत्तियों से ऐसा प्रतीत होता है कि फागुन स्वयं में ‘ब्रह्मतुराज’ है। फूल खिल उठते हैं, लगता है कि जैसे फागुन के गले में किसी ने पुष्पमाला डाल दी हो। यह फागुन की अनुपम शोभा है जो सृष्टि के प्राणियों को प्रसन्न कर देती है।

उत्तर - 10 (घ)

हमारी दृष्टि से कन्या के दम की बात करना सर्वथा अनुचित है। कन्या कोई वस्तु नहीं जिसका दान किया जा सके। उसका अपना स्वतंत्र अस्तित्व है। यह तो फूल-प्रद्यान समाज की न समझी का परिचायक है कि जिन छोटियों को हम देवी मानते हैं, उन्हीं को दान करने की बात कहते हैं।

जब लड़का - लड़की एक समान हैं तो दाम की बात का कोई अस्तित्व ही नहीं होना चाहिए। यह सर्वथा अनुचित है।

उत्तर - 10 (इ०)

बच्चे की मुस्कान को कवि ने दंतुरित कहा है क्योंकि उसकी मुस्कान मनमोहक है जिसमें उसके छोटे दंत भी दिख रहे हैं। कवि उसकी मुस्कान देखने पर वात्सल्य के भाव से भर अता है। उसे लगता है कि जैसे कमल का फूल तालाब छोड़कर उसकी झोपड़ी में खिल गया है। उसकी मनमोहक मुस्कान से उसे लगता है:- "छु कर, पस्स पाकर तुम्हारा ही प्राण, जल बन गया होगा पिघलकर कौन पाषाण।" अर्थात् उसकी मुस्कान को देखकर कठोर हृदय भी टरल हो जाए। मृतक में भी जन आ जाए और बबूल के पेड़ों से शैफालिका के फूल ज़िरने लगें। कवि उसकी मुस्कान से प्रभावित है।

उत्तर-11

पाठ 'सना-सना हाथ जोड़ि' में लेखिका ने युग्मयांग की एक युवती से प्रश्न किया कि, "क्या तुम सिविकमी हो?" तो उसने उत्तर दिया "नहीं, मैं इंडियन हूँ" इस कथन से यह स्पष्ट हो गया कि राष्ट्र किसी भी धर्म, स्थान, संप्रदाय से उत्त्य है।

राष्ट्र की सेवा का उर्ध्व यह है कि हम उसमें मौजूद सभी, नागरिकों, पढ़ी, फूलों, पेड़ों आदि का सम्मान करें व उनके उत्त्यान के प्रयास करें। राष्ट्र के प्रति कर्तव्य मात्र सेवा ही नहीं निभाती बल्कि प्रत्येक नागरिक राष्ट्र की उन्नति में भागीदार होता है।

हम अपने दैनिक जीवन से जुड़े कार्यों को इमानदारी से करें, राष्ट्र के बातावरण को संरक्षित करें; भृत्याचार न करें, अपने कार्यों को पूर्ण लगन के साथ करें; देश की सेवा व संस्कृति का सम्मान करें। अस्तरी नहीं है, कि हर देशावासी उत्त्य पद पर पहुँच सके और देश सेवा कर सके। हमें व्यक्तिगत स्तर पर हर संभव प्रयास करना होगा जिससे राष्ट्र प्रगतिशील रहे। अपने मौलिक अधिकारों व कर्तव्यों के बरे में जागरूक होना, चुनावों में भाग लेकर मतदान करना, जाति-पाति की सुनिचित मानसिकता से उत्तरना, राष्ट्रीय एकता बनाना,

स्वरक्षिता बनाये रखना और कुछ ऐसे कार्य हैं जो नागरिक अपने राष्ट्र के प्रति कर के अपना प्रेम व्यक्त कर सकते हैं।

खंड - द

उत्तर - 12 (क)

महानगरों में महिलाओं की सुरक्षा

संपरेखा :-

- प्रस्तावना
- जीवन शैली
- कामकाजी महिलाओं की समस्या
- सुरक्षा में कमी के कारण व सुझाव
- उपसंहार

महानगरों में महिलाओं की सुरक्षा

★ प्रस्तावना :-

“देश के विकास की आवारशिला, महिलाओं से बनती है।”
 देश का हर नागरिक उसके लिए समान रूप से महत्वपूर्ण होता है। आज आव्युनिकता की होड़ ने व्यक्ति को व्यस्त बना रखा है। महानगर, जो वे शहर हैं जिनकी अबादी ५०लाख से ऊपर होती है, उन्हें प्रगति की पहचान है। परंतु यह भी सत्य है कि आज इन महानगरों में ही हमारे देश की महिलाएँ सुरक्षित नहीं हैं। जिस भारत की उत्कृष्ट संस्कृति में महिलाओं को ‘दुर्गा’, ‘सरस्वता’, ‘लक्ष्मी’ माना जाता है उआखर क्यों आज वही महिलाएँ उपरे ही देश में सुरक्षित नहीं हैं? यह एक चिंताजनक विषय है।

★ जीवन रौली :-

महानगरों की महिलाओं की जीवन रौली आज अत्यंत ही व्यस्त है। नारी शासकीकरण के चलते आज

माहिलाएँ विभिन्न संस्थाओं में कार्यरत हैं व आत्म निर्भर हैं।
परंतु यह तो उन माहिलाओं के लिए हैं जो अपने अवसरों को
पहचानती हैं। एक बड़ा वर्ग ऐसा भी है जो शोषण का शिकार
है। जी हाँ, महाबगरों में केवल उच्च व अच्छे वातावरण की
संस्थाएँ ही नहीं हैं। वालिक ऐसी संस्थाएँ भी हैं जहाँ का
वातावरण दृष्टि व माहिलाओं के लिए प्रतिकूल है। यह अपने
और अपने परिवार के पालन-पोषण की मजबूरी ही है जो माहिलाओं
को ऐसी संस्थाओं में कार्य करने पर विवरण करता है जहाँ पर उनका
शोषण होने की संभावनाएँ हैं।

* कामकाजी माहिलाओं की समस्या:-

वे माहिलाएँ जो कार्य क्षेत्र से जुड़ी हैं
उनके लिए सबसे लड़ी समस्या है अनुपयुक्त वक्त में इस्तुती करना।
अर्थात् रात के समय, जब माहिलाओं पर शोषण की पूरी
संभावनाएँ होती हैं। इसका कारण लंचर सुरक्षा व्यवस्था व
संकाचित मानासीकता है। माहिलाओं पर विभिन्न प्रकार के अत्याचार
जैसे:- यौन शोषण, एसिड से हमला, अपहरण आदि किए जाते
हैं। यह एक शर्मनाक वस्तु है कि स्वतंत्रता के इतने बड़ी बाद

मी हम महिलाओं को उनकी सुरक्षा वहीं दे पाए हैं।

* सुरक्षा में कमियों के कारण व सुझाव:-

महिलाओं की लचर

सुरक्षा व्यवस्था के लिए निश्चित रूप से ही प्रशासन की लचर व्यवस्था ज़िम्मेदार है। इसका कारण है - पुरुष प्रदान समाज जो हमेशा से ही महिलाओं की उच्चति का विरोधी रहा है परिणाम स्वरूप हमारी रजनीति में मात्र 10% महिलाएँ ही लोकसभा की सदस्य हैं। ऐसे 1990 से ही "महिला सुरक्षा बिल" अटका है।

इतना ही नहीं पुलिस प्रशासन की लापरवाही के कारण मी आज महिलाएँ असुरक्षित हैं। भूदृहत्या जिसने देश में पुरुष-स्त्री का अनुपात बिगाड़ दिया है, लोगों की संकुचित मानसिकता को दर्शाता है। हम चाहे जितनी प्रगति कर लें हमारी मानसिकता आज भी महिला को भोग की वस्तु समझता है।

अब आखिर इस समस्या का समाधान क्या है? सर्वप्रथम कानून व्यवस्था को सख्ती बरतनी होगी अर्थात् उपराजियों को दंड देना होगा। जब एक अपराधी सलाखों के पीछे जाएगा तो उपरे आप ही बाकी भयभीत रहेंगे।

माहिलाओं को स्वयं में आत्मसेवा से शक्ति लानी होगी तभी वे सुरक्षित रहेंगी। हेल्पलाइन नंबर व माहिलाओं कोजगारूक करने के हम उनकी सुरक्षा सुनिश्चित कर सकते हैं।

★ उपस्थिरः

माहिला सुरक्षा आज एक बड़ा प्रश्न है मानवता के लिये। यह हमारा दायित्व है कि हम प्रत्येक नागरिक की सुरक्षा सुनिश्चित करें। स्त्रीशिक्षा को बढ़ावा दें व सरचे अध्योग्य में स्त्री-पुरुष एक समान की धारणा को अपनाएं। यह आज राष्ट्र व समय की उन्नती का है। "एक माहिला पुरी पीढ़ी का जीवन करने में काबिल होती है।"

उत्तर-13.

सेवा में,

थानाद्यक्ष जी

- - - थाना

अ व स नगर

विषयः:- क्षेत्र में बढ़ते अपराधों के संदर्भ में।

महोदय,

इस पत्र द्वारा मैं आपका ध्यान इंदिरा नगर क्षेत्र में बढ़ते हुए अपराधों की ओर आकृष्ट करना चाहता हूँ। गत सक्र माह से हमारे क्षेत्र में अपराधियों की संख्या में वृद्धि आई है। अपराधी निर्भय होकर सड़कों पर धूमते हैं। माहिलाओं की चेन छीन लेते हैं। कई घरों में चोरी की घटनाएँ भी दृष्टिय हुई हैं। अपराधी घरों में धुस कर बंदूक की नोक पर लोगों का अपहरण भी कर रहे हैं।

पुलिस इन घटनाओं पर अँकश लगाने में असफल रही है। हमने कई बार चौकियों पर शिकायत भी की किंतु परिणाम नहीं निकले। परिणाम स्वरूप हम सभी भयाकूत हैं व हमारी दैनिक गतिविधियों बरी तरह से प्रभावित हैं।

अस्तु आपसे सादर अनुरोध है कि इस समस्या के बिषय में समुचित कार्रवाई करने, की कृपा करे ताकि हम सभी नागरिक शांति पूर्ण ढंग से जीवन निवाह कर सकें।

मैं आपका आभारी रहूँगा।

मवदीरा

क ख ङ।

19/03/20XX

उत्तर - 14.

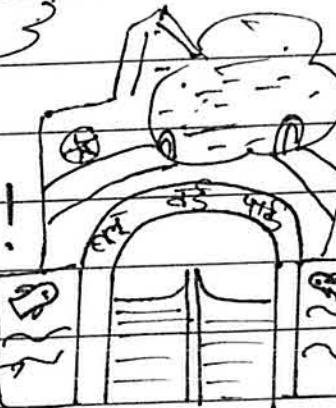
आगया!

आगया!

आगया!

बुल वड वाटर पांक

अब आपके शहर में!
आज ही आर्य और भस्ती करें!



- पानी के विभिन्न खेल।
- रोमांचक झुले।
- खान - पान की स्वच्छ व्यवस्था।
- भरोरंजन की व्यवस्था।

जलदी करें!

पहले सौ ग्राहकों को एक महीने का मुफ्त पास!

पता :- 31/204 सेक्टर-वी, अब स नगर

मोबाइल नंबर :- 99800XXXXX

